চা চাষিদের কর্মশালা

জলপাইগুড়ি, ২৫ আগস্ট ঃ শনিবার জলপাইগুড়িতে ভারতীয় চা পর্ষদের রিসার্চ সেলের উদ্যোগে কর্মশালা হল। ক্ষুদ্র চা চাষিরা এই কর্মশালায় উপস্থিত ছিলেন। চায়ের রোগ-পোকা ও তার প্রতিকার নিয়ে কর্মশালাতে আলোচনা হয়। চা পর্ষদের রিসার্চ সেলের বিশেষজ্ঞ ডঃ অনির্বাণ বসুমজুমদার স্লাইডের মাধ্যমে রোগ-পোকার আক্রমণ এবং তার প্রতিকারের বিষয়ে ক্ষুদ্র চা চাষিদের অবহিত করেন। ১১৫ জন ক্ষুদ্র চা চাষি কর্মশালাতে উপস্থিত ছিলেন। সর্বভারতীয় ক্ষুদ্র চা চাষিদের সংগঠনের সভাপতি বিজয়গোপাল চক্রবর্তী এবং টি বোর্ডের অ্যাসিস্ট্যান্ট ডাইরেক্টর সমরেশ মণ্ডল কর্মশালাতে বক্তব্য রাখেন।

-সংবাদ নিউজ সার্ভিস

4 उत्तर बंगाल जनपथ समाचार
सिलीगुड़ी 26 अगस्त 2012

चाय के पौधों में लगने वाले रोग व कीटनाशक के प्रति किया जागरूक

जलपाईगुड़ी (निज संवाददाता)। चाय बगानों में उपयोग में लाये जाने वाले कीटनाशक का मापदंड निर्धारित करने व चाय गुणवत्ता बढ़ाने को लेकर भारतीय टी बोर्ड ने जागरूक किया। शनिवार को जलपाईगुड़ी शहर के एक गैर सरकारी होटल में उत्तर बंग लघु चाय मालिकों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। वर्तमान समय में चाय के पौधे में विभिन्न तरह के रोग लग जा रहे हैं। इससे बचाव के लिए कीटनाशक का छिड़काव किया जा रहा है, जिससे चाय की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा है। भारतीय टी बोर्ड के कोलकाता कार्यालय के रिसोर्स ऑफिसर डॉक्टर अर्निबन बसु मजुमदार ने कहा कि कुल उत्पादन का 30 प्रतिशत चाय लघु चाय उत्पादकों से आता है। चाय के पौधों पर कीटों का हमला बढ़ गया है, इससे चाय की हरियाली खत्म हो जाती है। समय से बारिश नहीं होने के कारण ऐसा हो रहा है। मार्च महीने से सितंबर महीने तक इस तरह के रोग लगते हैं। विदेशों में चाय की आपूर्ति किये जाते समय किस तरह का कीटनाशक का उपयोग किया गया है यह देखा जाता है। रोग लगने की स्थिति में 23 तरह के स्प्रे को मंजूरी दी गयी है। कुछ स्प्रे ऐसे हैं जिससे चाय के पैदावार व गुणवत्ता पर असर नहीं होता है, जबकि कुछ एक ऐसे हैं, जिससे यह प्रभावित होता है। कंफडरेशन ऑफ यूनियन स्मॉल टी एसोसिएशन के सभापति विजय गोपाल चक्रवर्ती ने कहा कि टी बोर्ड के निर्देशानुसार कीटनाशकों के प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है। कार्यक्रम में टी बोर्ड जलपाईगुड़ी कार्यालय के सहायक निदेशक समरेश मंडल व जलपाईगुड़ी जिला के 300 लघु चाय बगानों के मालिकों ने हिस्सा लिया।

চা বাগানে পোকা দমন করতে প্রচারে নামল ভারতীয় চা পর্ষদ

নিজস্ব সংবাদদাতা, জলপাইগুড়ি, ২৫ আগস্ট ঃ সরকার থেকে নির্দিষ্ট করে দেওয়া কীটনাশক দিয়ে চায়ের গুণগত মান উন্নত করার জন্য প্রচার শুরু করল ভারতীয় চা পর্ষদ। শনিবার জলপাইগুড়ি শহরের একটি বেসরকারি হোটেলে উত্তরবঙ্গের ক্ষুদ্র চা চাষিদের এই বিষয়ে প্রশিক্ষণ দেওয়া হয় চা পর্ষদ থেকে। আবহাওয়া পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে চা শিল্পে রোগ পোকার আক্রমণও বিভিন্নভাবে বেড়ে চলছে বলে চা পর্ষদ থেকে আশঙ্কা প্রকাশ করা হয়েছে। ভারতীয় চা পর্ষদের কলকাতা কার্যালয়ে রিসার্চ অফিসার (কীটনাশক) ডঃ অনির্বাণ বসু মজুমদার সাংবাদিক বৈঠকে বলেন, সারাদেশে মোট উৎপাদিত চায়ের প্রায় ৩০ শতাংশ চা সরবরাহ হয় ক্ষুদ্র চা বাগান থেকে। রাজ্য তথা উত্তরবঙ্গের অধিকাংশ ক্ষুদ্র ও বড়ো চা বাগানগুলি জঙ্গল সংলগ্ন এলাকায় অবস্থিত, বর্ষার সময় বিভিন্ন ধরনের রোগ-পোকার আক্রমণ বেড়ে যায়। লাল মাকড়সা, লুপার, হেলোপেলটিস থিডোরা (চা গাছের মশা) ও বিভিন্ন প্রজাতির শোষক পোকার আক্রমণে চা গাছের কচি সবুজ পাতা নষ্ট হয়। প্রয়োজনের সময় বৃষ্টিপাত না হলে

এই ধরনের রোগ-পোকার আক্রমণ বেড়ে যায়। মার্চ মাস থেকে সেপ্টেম্বর মাস পর্যন্ত এই ধরনের রোগ-পোকার প্রাদুর্ভাব বেশি হয় বলে অনির্বাণবাবু জানান। ভারত থেকে বিদেশে চা রপ্তানির সময় চায়ের গুণগতমান কী অবস্থায় রয়েছে, বিশেষ করে চা উৎপাদনে রাসায়নিক সার ও কীটনাশকের ব্যবহার বেশি হয়েছে কিনা তা দেখা হয়। তাই কেন্দ্রীয় সরকারের সেন্ট্রাল ইনসেক্টিসাইট বোর্ডের নির্দেশ অনুসারে রোগ-পোকার আক্রমণ বন্ধ করে চায়ের গুণগতমান উন্নত করার উপর জোর দিয়েছে চা পর্ষদ বলে অনির্বাণবাবু জানিয়েছেন। কনফেডারেশন অফ ইন্ডিয়ান স্মল টি অ্যাসোসিয়েশনের সভাপতি বিজয়গোপাল চক্রবর্তী জানান, চা পর্ষদের নির্দেশ মেনে উত্তরবঙ্গের ক্ষুদ্র চা চাষিরা যাতে রোগ-পোকার আক্রমণ ঠেকিয়ে সুসংহত উপায়ে উন্নতমানের চা উৎপন্ন করতে পারে সেদিকে ক্ষুদ্র চাষিদের নজর দিতে বলা হয়েছে। এই ধরনের প্রশিক্ষণ উত্তরবঙ্গের বাকি জেলাগুলোতে করার প্রস্তুতি নেওয়া হয়েছে। এদিনের অনুষ্ঠানে টি বোর্ডের জলপাইগুড়ি কার্যালয়ের সহকারী অধিকর্তা সমরেশ মণ্ডল ও জলপাইগুড়ি জেলার ৩০০টি ক্ষুদ্র চা বাগানের মালিক অংশ নেয়।

4 | दैनिक जागरण सिलीगुड़ी, 26 अगस्त 2012

सेमिनार में चाय की गुणवत्ता बढ़ाने की चर्चा

सेमिनार में भाग लेते लोग। जागरण

जलपाईगुड़ी, जागरण संवाददाता : भारतीय चाय परिषद की ओर से चाय बागानों में रोग व कीड़ों को दमन करने के लिए सरकार से निर्धारित कीटनाशक का उपयोग कर चाय की गुणवत्ता को बढ़ाने के उद्देश्य से सेमिनार आयोजित किया गया। जहां चाय परिषद की ओर से उत्तर बंगाल के लघु चाय किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

शनिवार को स्थानीय एक होटल में आयोजित सेमिनार में चाय परिषद के कोलकाता कार्यालय के रिसर्च आफिसर डा. अनिर्वाण बसु मजूमदार ने बताया कि देश में उत्पादित चाय का 30 प्रतिशत उत्पादन लघु चाय किसान करते हैं। बारिश के समय उत्तर बंग लघु चाय बागान में कीड़ों के हमले अधिक होते हैं। लाल मकड़ा, लुपर हेलो पेलटिस थी वोरा सहित विभिन्न कीड़ों के हमले से चाय की पत्तियां नष्ट हो जाती है। इस तरह के कीड़ों से किस तरह बचा जाए इसके लिए चाय किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। केंद्र सरकार की तरफ से निर्धारित 23 कीटनाशकों के उपयोग किया जा सकता है इस पर जोर दिया गया है ताकि पत्तों की गुणवत्ता सही रहे। कंनफेडरेशन ऑफ इंडियन स्माल टी एसोसिएशन के अध्यक्ष विजय गोपाल चक्रवर्ती ने बताया कि इस तरह का प्रशिक्षण लघु किसानों के चाय पत्तों की गुणवत्ता बढ़ाने एवं कीड़ों के हमले से बचाने में मदद करेगा। कार्यक्रम में टी बोर्ड के जलपाईगुड़ी कार्यालय के समरेश मंडल सहित लघु चाय मालिक उपस्थित थे।

Workshop for Small Tea Growers held

Tea Board conducted workshop on Pests of tea and usages of Pesticides for the STGs of North Bengal

Jalpaiguri 26 August: Tea Board of India conducted a workshop on pests and diseases of tea plant and usages of Pesticides for the Small Tea Growerss of North Bengal on 25th August, 2012 at Jalpaiguri. The programme was organized by Tea Board Jalpaiguri office in association with Confederation of Indian Small Tea Growers Association (CISTA).

Mr. Samaresh Mondal, Assitt. Director of Tea development welcomed the participants and briefed on the objectives of the workshop. The President of CISTA, Mr. Bijoy Gopal Chakravarty congratulated Tea Board for such initiative in providing technical support on usage of pesticides in tea. He told that such workshop in regional language will not only help growers in producing quality green leaves but also enable to reduce cost of agro inputs by correct choice of pesticides.

Dr. A. Basu Majumder, Research Officer, Tea Board elaborately discussed on the major insect pests, diseases and weeds of tea, their biology, time of occurrence and nature of damage. Detailed strategies on their integrated management were also discussed along with nature of pesticides to be used as per CIB recommendation, their dosage, do's and don'ts for pesticide spraying etc.

Among the others, Mr. Rajat Kr. RayKarji, Chairman, United Forum of Small Tea Growers Association, North Bengal and Mr. Ranjit Ganguly, President, Uttar banga Khudra Prantik Cha Chashi Samiti were present in the workshop.

More than 100 participants from various Self Help Groups of Small Tea Growers of North Bengal participated in the workshop.